बागड़ी

भारत की गौरवशाली देशी गोवंशीय विरासत

प्रस्तावना

भारत की धरती पर गोवंश की अनेक विशिष्ट नस्लों ने सदियों से अपनी अलग पहचान बनाई है। उनके इतिहास, उत्पत्ति, स्वरूप, गुण और उपयोग का विवरण पुरानी पुस्तकों, सरकारी रिपोर्टों, सर्वेक्षणों तथा अन्य ऐतिहासिक स्रोतों में बिखरा हुआ है।

यह संकलन उसी प्रामाणिक ऐतिहासिक सामग्री को एक स्थान पर प्रस्तुत करने और हिंदी पाठकों के लिए सरल एवं सुगम बनाने का प्रयास है। इसमें भारतीय गोवंश के इतिहास, पहचान और विशेषताओं से संबंधित जानकारी को मूल स्रोतों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

यह संकलन किसी नस्ल का आधुनिक वैज्ञानिक मूल्यांकन नहीं, बल्कि ऐतिहासिक स्रोतों में दर्ज उसके स्वरूप, विशेषताओं और इतिहास को आज के पाठक तक पहुँचाने का एक विनम्र प्रयास है।

|| मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः ||

मूल स्रोत
पुस्तक: Indigenous Breeds of Cattle in Rajputana
लेखक: Major F. S. H. Baldrey
प्रकाशन वर्ष: 1911

पुस्तक की ऑनलाइन PDF प्रति: | www.surbhisewa.com

अनुवाद संबंधी सूचना

यह हिंदी पाठक संस्करण कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की सहायता से तैयार किया गया है। किसी तथ्य अथवा अनुवाद में अंतर पाए जाने पर संबंधित मूल पुस्तक को ही अंतिम और प्रामाणिक स्रोत माना जाए।

बागड़ी गोवंश

मूल स्रोत: मेजर एफ. एस. एच. बाल्ड्रे, राजपूताना के स्वदेशी गोवंश, 1911

विशिष्ट और सीमित संख्या वाली नस्ल

बाल्ड्रे इस नस्ल को छोटे लेकिन मजबूत गोवंश का एक स्पष्ट और अलग प्रकार बताता है। यह संख्या और आकार—दोनों में छोटी थी तथा राजपूताना के एक विशेष क्षेत्र तक सीमित थी, जहाँ इसे बहुत महत्व दिया जाता था।

हाल के अकाल और चारे की कमी ने इसके झुंडों को बहुत कम कर दिया था। टोडा रायसिंह क्षेत्र में गायें समाप्त हो गई थीं और पशुपालकों के लिए अपने कामकाजी बैलों को बचाना भी बहुत कठिन हुआ था।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 28 | पीडीएफ पृ. 45.

प्रजनन क्षेत्र और वितरण

लेखक वास्तविक प्रजनन-केंद्र धौलपुर के आसपास के अपेक्षाकृत सीमित क्षेत्र को बताता है। इसके विस्तार का वर्णन टोंक से जयपुर की दिशा और वहाँ से लगभग 120 मील पश्चिम तथा दक्षिण तक किया गया है।

इन पशुओं का प्रमुख क्षेत्र टोडा रायसिंह के लगभग 40 मील के दायरे में माना गया है; टोडा रायसिंह टोंक से 24 मील और जयपुर से 74 मील बताया गया है। करौली और देवली के कुछ हिस्सों सहित इस पूरे क्षेत्र में बागड़ी पशु व्यापक रूप से काम में लिए जाते तथा पाले और प्रजनित किए जाते थे।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 28 | पीडीएफ पृ. 45.

सामान्य रूप और स्वभाव

सामान्य रूप में इन्हें सुंदर और शांत स्वभाव का बताया गया है। लेखक इनके रूप की तुलना स्कॉटिश हाइलैंड गोवंश से करता है और इन्हें भारत की दूसरी नस्लों से स्पष्ट रूप से भिन्न मानता है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 28 | पीडीएफ पृ. 45.

पशु-मेला और बिक्री

इनका प्रजनन धौलपुर, करौली और उनियारा में किया जाता था। वहाँ से पशु केकड़ी और पुष्कर के मेलों में बिक्री के लिए लाए जाते थे।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 28 | पीडीएफ पृ. 45.

मिट्टी, पानी और पुराने चरागाह

क्षेत्र की मिट्टी काली थी, जिसे स्रोत में 'काला माल' कहा गया है, और इसे अच्छा चारा पैदा करने वाली भूमि बताया गया है। नीचे की परत चट्टानी थी, यद्यपि चट्टानें सामान्यतः ऊपर दिखाई नहीं देती थीं।

फसलें लगभग पूरी तरह वर्षा पर निर्भर थीं और सिंचाई बहुत कम थी। पुराने राजाओं के समय यह क्षेत्र पशुओं के लिए चारा उगाने में उपयोग किया जाता था, लेकिन लेखक के समय खेती तेजी से फैल रही थी। वर्षा का पानी इकट्ठा करने के लिए कुछ कच्चे और 1–2 पक्के तालाब बनाए गए थे; पीने का पानी बावलियों, पक्के तालाबों और कुओं से मिलता था।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 28 | पीडीएफ पृ. 45.

बागड़ी गाय का रंग और सिर

गायें छोटी होती थीं। रंग भूरा, काला, सफेद या लाल मिलता था और स्थानीय लोग सामान्यतः लाल रंग को अधिक पसंद करते थे।

चेहरा चौड़ा और सपाट, माथा बहुत चौड़ा तथा अवतल है। नाक चौड़ी है। सींग जोरदार ढंग से ऊपर और बाहर की ओर मुड़ते हैं और उनमें सर्पिल घुमाव रहता है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 28–29 | पीडीएफ पृ. 45, 48.

बागड़ी गाय (Bagri Cow)

स्रोत: मेजर एफ. एस. एच. बाल्ड्रे, राजपूताना के स्वदेशी गोवंश, 1911

(Plate XIV)

स्थान: टोका रायसिंह, टोंक से 24 मील

रंग: सफेद, लाल चितियों वाला

"स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।"

बागड़ी गाय (Bagri Cow)

सोत: मेजर एफ. एस. एच. वाल्ड्डे, राजपूताना के स्वदेशी गोवंश, 1911

(Plate XVI)

उपयोग: जुताई का कार्य • विशेषता: सपिल सींग

स्थान: टोडा रायसिंह

“स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।”

गर्दन, कुकुद, पीठ, पूँछ और पैर

गर्दन छोटी, कुकुद अच्छी तरह विकसित, पीठ छोटी और पसलियाँ अच्छी तरह गोल हैं। पिछला ऊपरी भाग बहुत लंबा है और पूँछ अच्छी तरह लगी हुई है। पूँछ छोटी और चाबुक जैसी है तथा अंत में घने काले बालों का गुच्छा रहता है, जो पिछले जोड़ से काफी नीचे तक पहुँचता है। पैर छोटे और खुर महीन, छोटे तथा सघन हैं।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 29 | पीडीएफ पृ. 48.

बागड़ी कामकाजी बैल

कामकाजी बैल सफेद, लाल और काले रंग के या इन तीनों के मिश्रण में मिलते थे। मिश्रित रंग, विशेषकर लाल और सफेद, स्थानीय लोगों को अधिक पसंद था। सिर अपेक्षाकृत छोटा, चेहरा छोटा और माथा गाय की तरह चौड़ा है। आँखें कुछ पीछे स्थित हैं और पलकें गाय की तुलना में भारी हैं। नाक चौड़ी और कान छोटे तथा लटकते हुए हैं।

गर्दन छोटी, गलकम्बल अच्छी तरह विकसित और कुकुद मध्यम आकार का है। कंधे गहरे और अच्छे ढलाव वाले हैं; अगले पैर छोटे और शक्तिशाली हैं। गाय की तुलना में पीठ कुछ लंबी है।

लिंगावरण अच्छी तरह विकसित है। पिछला भाग छोटा लेकिन पर्याप्त सीधा है और पूँछ अच्छी तरह लगी हुई है। पिछली जाँघें और जोड़ विकसित हैं। खुर छोटे, कठोर और सघन हैं तथा पूँछ के अंतिम भाग में बहुत घने बाल होते हैं।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 29 | पीडीएफ पृ. 48.

सांड और बधियाकरण के प्रति धारणा

सांड का वर्णन कामकाजी बैल जैसा ही है; मुख्य अंतर यह है कि सांड का कुकुद अधिक विकसित होता है।

अधिकांश कामकाजी नर पशु बिना बधिया किए ही रखे जाते थे और लेखक के अनुसार वे सामान्यतः कोई परेशानी नहीं देते थे। कृषकों में बधियाकरण के प्रति स्पष्ट पूर्वाग्रह था।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 29 | पीडीएफ पृ. 48.

काम में सांड और बैल का उपयोग

बधियाकरण प्रचलित न होने के कारण सांड और बैल दोनों को काम में लगभग समान रूप से लगाया जाता था। लेकिन काम में लगाए जाने वाले सांडों को प्रजनन के लिए उपयोग नहीं किया जाता था। स्थानीय धारणा थी कि एक बार प्रजनन में उपयोग होने के बाद सांड खिंचाव के काम में संभालना कठिन हो जाता है। काम का प्रकार अन्य क्षेत्रों जैसा था। ये छोटे और मजबूत पशु थे, लेकिन चाल धीमी और भारी थी। स्रोत में कहा गया है कि वे रेतीले क्षेत्र के बाहर अच्छा काम नहीं करते और इसी कारण सैन्य परिवहन या तोपखाना कार्य के लिए उपयुक्त नहीं माने गए।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 29 | पीडीएफ पृ. 48.

दूध

गायें सामान्यतः दूध के विशेष उद्देश्य से नहीं रखी जाती थीं। बंधा हुआ अतिरिक्त आहार देने और दूध बढ़ाने के सामान्य उपाय अपनाने पर भी वे कम दूध देने वाली रहती थीं। साधारण दूध-उत्पादन 2–4 सेर प्रतिदिन, अर्थात लगभग 1.9–3.7 किलोग्राम प्रतिदिन बताया गया है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 29 | पीडीएफ पृ. 48.

चराई और अतिरिक्त आहार

क्षेत्र की सामान्य घासों में 'निलोटी', 'जिंगला' और 'सूली' का उल्लेख है। ये अकृषित भूमि पर बहुत उगती थीं और वर्ष के अधिकांश समय गायों को दिन में ऐसे क्षेत्रों में खुला चरने दिया जाता था। सामान्यतः केवल कामकाजी पशुओं को बंधा हुआ आहार दिया जाता था। विश्राम के समय उन्हें भी गाँव के आसपास चरने छोड़ दिया जाता था। गर्भित और दूध देती गायों को अतिरिक्त आहार में लगभग 1 सेर कपास-बीज और खल तथा लगभग 10 सेर ग्वार और चरी दी जाती थी। यही आहार कामकाजी पशुओं को भी दिया जाता था।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 30 | पीडीएफ पृ. 49.

प्रजनन-सांडों का चयन

अच्छे प्रजनन-सांडों के चयन पर ध्यान दिया जाता था। धार्मिक अवसरों पर संपन्न बनियों द्वारा सांड-बछड़ों को खुला छोड़ने की सामान्य हिंदू प्रथा यहाँ भी प्रचलित थी।

सांडों को सामान्यतः 4 वर्ष की आयु से पहले गायों के साथ प्रजनन नहीं करने दिया जाता था, यद्यपि वे गाँवों के आसपास स्वतंत्र घूमते और खेतों से अच्छा भोजन प्राप्त करते थे।

झुंडों में सांडों की संख्या कम थी और इस कारण वे सभी गायों तक पर्याप्त रूप से नहीं पहुँच पाते थे। परिणामस्वरूप कभी-कभी ऐसे अपरिपक्व सांड, जो काम के लिए भी अभी पर्याप्त बड़े नहीं हुए थे, कुछ गायों से प्रजनन कर लेते थे। लेखक इसे नस्ल में गिरावट की एक प्रवृत्ति से जोड़ता है। इस क्षेत्र के पशुपालक गायों की गुणवत्ता पर बहुत अधिक ध्यान नहीं देते थे। सभी गायें सामूहिक झुंड में खुली रहती थीं और सांडों से बिना विशेष चयन के मिलती थीं, हालांकि गाय को लगभग 3 वर्ष की आयु से पहले प्रजनन में न लाने का प्रयास किया जाता था।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 30 | पीडीएफ पृ. 49.

युवा पशुओं की देखभाल

युवा पशुओं की देखभाल मेवात में प्रचलित पद्धति के समान बताई गई है। स्रोत इस स्थान पर उसका अलग विस्तृत वर्णन दोहराता नहीं है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 30 | पीडीएफ पृ. 49.

बधियाकरण की स्थिति

बधियाकरण के प्रति विरोध इस क्षेत्र में राजपूताना के अन्य भागों से भी अधिक बताया गया है। टोडा रायसिंह तहसील में लगभग कोई बधियाकरण नहीं किया जाता था और खेतों तथा गाड़ियों में बिना बधिया किए नर पशुओं को काम करते देखना सामान्य था।

ऐसे पशु सामान्यतः शांत रहते थे, सिवाय उन पशुओं के जिन्हें प्रजनन करने दिया गया हो। फिर भी कुछ बधियाकरण प्रचलित मसलने की पद्धति से होता था। पशुओं को इसके लिए मालिक के क्षेत्र से दूर भेजा जाता था, ताकि यह काम उसकी निकटता में न हो और उसकी सामाजिक धारणा आहत न हो।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 30 | पीडीएफ पृ. 49.

1911 में दर्ज कीमतें और रोग

श्रेणी	दर्ज कीमत
गाय	₹10–₹25
कामकाजी बैलों की जोड़ी	₹50–₹100

सामान्य रोगों में खुरपका-मुँहपका और रिंडरपेस्ट का उल्लेख है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 30 | पीडीएफ पृ. 49.

चरागाह भूमि में कमी

लेखक के समय खेती के लिए बहुत अधिक भूमि ले ली गई थी। पहले गाँव की भूमि 3 भागों में बाँटी जाती थी—एक चरागाह के लिए, एक खेती के लिए और एक घास उगाकर संग्रह करने के लिए। प्रत्येक 3 वर्ष में इन भागों की अदला-बदली होती थी।

खेती बढ़ने से पशुओं के चरने की भूमि बहुत सीमित हो गई और हाल के अकाल में इसका गंभीर प्रभाव महसूस हुआ। लेखक चारे के लिए अलग 'राख' सुरक्षित रखने पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता बताता है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 31 | पीडीएफ पृ. 50.

मेलों के बारे में लेखक का सुझाव

इन पशुओं के मिलने वाले मेलों को अलवर क्षेत्र के मेलों से जोड़ा गया है। लेखक सुझाव देता है कि इस नस्ल के लिए 1–2 अलग श्रेणियाँ बनाई जाएँ और पुष्कर मेले में पुरस्कार दिए जाएँ।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 31 | पीडीएफ पृ. 50.

बागड़ी गोवंश की मूल माप-तालिका

मूल रिपोर्ट के माप इंच में दिए गए हैं। गाय संख्या 49 के सिर से संबंधित माप स्रोत में नहीं लिए जा सके थे; इसलिए उन्हें अनुमान से नहीं भरा गया है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 32 | पीडीएफ पृ. 51.

पशु	ऊँचाई	शरीर लंबाई	छाती घेरा	पिंडली घेरा	पिंडली लंबाई	सींग	चेहरा	माथा	आयु	रंग
बागड़ी गाय 49	45	45	56	5½	6½	सिर का माप नहीं लिया जा सका			—	—
बागड़ी बैल 50 - जोड़ी 1	53	56	73	8½	6½	25	20½	7	8	सफेद
बागड़ी बैल 50 - जोड़ी 2	54	54	71	7½	6½	26	21	7½	8	लाल
बागड़ी सांड 51	61½	55	66	7½	7½	22	20	7	7	काला और सफेद

माँ है, शब्दों से नहीं,
आँखों से बोलती है।
इसके सीने पर अपना कान लगाओ तो सही।
हर धड़कन में दुलार है,
कुछ देर तुम भी इससे बतलाओ तो सही।
तुम्हारे हर दर्द को अपने में समेट लेगी,
बस माँ कहकर इससे लिपट जाओ तो सही।
गौ माता राष्ट्रमाता
सेवा करें
संरक्षण करें
संवर्धन करें
www.surbhisewa.com